अग्निकार्यावसानं च सर्वत्रैव समो विधिः। अथ चिन्तामयं सर्वं समाप्याराधनक्रमम्॥ २२॥ लिङ्गे च पूजयेद्देवं स्थण्डिले वानलेऽपि वा॥ २३॥

इति श्रीशिवमहापुराणे सप्तम्यां वायवीयसंहितायामुत्तरभागे पूजाविधानव्याख्यानवर्णनं नाम त्रयोविंशोऽध्यायः॥ २३॥

अथ चतुर्विंशोऽध्यायः

उपमन्युरुवाच॥ **प्रोक्षयेमन्मूलमन्त्रेण पूजास्थानं विशुद्धये। गन्धचन्दनतोयेन पुष्पं तत्र विनिक्षिपेत्॥ १॥ अस्त्रेणोत्सार्य वै विघ्नानवगुण्ठ्य च वर्मणा। अस्त्रं दिक्षु प्रविन्यस्य कल्पयेदर्चनाभुवम्॥ २॥ तत्र दर्भान्परिस्तीर्य क्षालयेत्प्रोक्षणादिभिः। संशोध्य सर्वपात्राणि द्रव्यशुद्धिं समाचरेत्॥ ३॥ प्रोक्षणीमर्घ्यपात्रं च पाद्यपात्रमतः परम्। तथैवाचमनीयस्य पात्रं चेति चतुष्टयम्॥ ४॥ प्रक्षाल्य प्रोक्ष्य वीक्ष्याथ क्षिपेत्तेषु जलं शिवम्। पुण्यद्रव्याणि सर्वाणि यथालाभं विनिक्षिपेत्॥ ५॥ रत्नानि रजतं हेम गन्धपुष्पाक्षतादयः। फलपल्लवदर्भाश्च पुण्यद्रव्याण्यनेकधा॥ ६॥ स्नानोदके सुगन्धादि पानीये च विशेषतः। शीतलानि मनोज्ञानि कुसुमादीनि निक्षिपेत्॥ ७॥ उशीरं चन्दनं चैव पाद्ये तु परिकल्पयेत्। जातिकङ्कोलकर्पूरबहुमूलतमालकान्॥ ८॥ क्षिपेदाचमनीये च चूर्णयित्वा विशेषतः। एलां पात्रेषु सर्वेषु कर्पूरं चन्दनं तथा॥ ९॥ कुशाग्राण्यक्षतांश्चैव**

दोनों भौंहों के बीच में शुद्ध दीप की लौ के सदृश शिव का ध्यान करे। इस प्रकार अपने शरीर में, स्वतन्त्ररूप में, ध्यानमय योग में उनका ध्यान करे॥ २१॥ हवन-पर्यन्त सर्वत्र समान ही विधि है। इस चिन्तामय आराधना-क्रम को समाप्त कर॥ २२॥ लिंग में, स्थण्डिल में अथवा अग्नि में देव की पूजा करे॥ २३॥

इस प्रकार परममाहेश्वर **पण्डित तारादत्त त्रिपाठी** के पुत्र **डॉ० ब्रह्मानन्द त्रिपाठी** द्वारा रचित **शिवाटीका**, टिप्पणी आदि से संवलित शिवमहापुराण में पूजाविधानव्याख्या-वर्णन नामक तेईसवाँ अध्याय समाप्त॥ २३॥

उपमन्यु ने कहा— शुद्धि के लिये पूजास्थान का मूलमंत्र से प्रोक्षण करें तथा उसमें गंध, चन्दन, पुष्प और जल डालें॥ १॥ अस्त्र से विघ्नों को हटाकर कवच से ढँककर फिर उस अस्त्र को दिशाओं में रखकर पूजास्थान की कल्पना करें॥ २॥ प्रोक्षण आदि से उस भूमि को शुद्ध कर वहाँ कुश बिछा दें। सभी पात्रों को शुद्ध कर द्रव्यों को भी शुद्ध करें॥ ३॥ प्रोक्षणी, अर्घ्यपात्र, पाद्यपात्र तथा आचमनी—इन चार पात्रों को॥ ४॥ धोकर, पोंछकर, देखकर उनमें शुद्ध जल डालें। जो प्राप्त हों वे सभी पवित्र द्रव्य उनमें डालें॥ ५॥ रत्न, चाँदी, सोना, गन्ध, पुष्प, अक्षत, फल, पंचपल्लव, कुश तथा अनेक बार पुण्य द्रव्य को डालें॥ ६॥ स्नान तथा पीने के जल में विशेष करके सुगन्धि द्रव्य डाले और शीतल, मनोहर फूल आदि भी डाले॥ ७॥ पाद्यजल में खश, चन्दन डालें। जायफलं, कंकोल, कपूर, केवड़ा, तमाल॥ ८॥ इन्हें चूर्ण कर आचमन के योग्य जल में डाले। इलायची, कपूर तथा चन्दन सभी जलपात्रों

यवव्रीहितिलानपि। आज्यसिद्धार्थपुष्पाणि भसितञ्चार्घ्यपात्रके॥ १०॥ कुशपुष्पयवव्रीहिबहुमूलतमालकान्। प्रक्षिपेत्प्रोक्षणी-पात्रे भसितं च यथाक्रमम्॥ ११॥ सर्वत्र मन्त्रं विन्यस्य वर्मणावेष्टच्य बाह्यतः। पश्चादस्त्रेण संरक्ष्य धेनुमुद्रां प्रदर्शयेत्॥ १२॥ पूजाद्रव्याणि सर्वाणि प्रोक्षणीपात्रवारिणा। सम्प्रोक्ष्य मूलमन्त्रेण शोधयेद्विधिवत्ततः॥ १३॥ पात्राणां प्रोक्षणीमेकामलाभे सर्वकर्मसु। साधयेदर्घ्यमद्भिस्तत्सामान्यं साधकोत्तमः॥ १४॥ ततो विनायकं देवं भक्ष्यभोज्यादिभिः क्रमात्। पूजयित्वा विधानेन द्वारपार्श्वेऽथ दक्षिणे॥ १५॥ अन्तःपुराधिपं साक्षान्नन्दिनं सम्यगर्चयेत्। चामीकराचलप्रख्यं सर्वाभरण-भूषितम्॥ १६॥ बालेन्दुमुकुटं सौम्यं त्रिनेत्रं च चतुर्भुजम्। दीप्तशूलमृगीटङ्कतिग्मवेत्रधरं प्रभुम्॥ १७॥ चन्द्रबिम्बाभवदनं हरिवक्त्रमथापि वा। उत्तरे द्वारपार्श्वस्य भार्यां च मरुतां सुताम्॥ १८॥ सुयशां सुव्रतामम्बां पादमण्डनतत्पराम्। पूजयित्वा प्रविश्यान्तर्भवनं परमेष्ठिनः॥ १९॥ सम्पूज्य लिङ्गं तद्द्रव्यैर्निर्माल्यमपनोदयेत्। प्रक्षाल्य पुष्पं शिरसि न्यसेत्तस्य विशुद्धये॥ २०॥ पुष्पहस्तो जपेच्छक्त्या मन्त्रं मन्त्रविशुद्धये। ऐशान्यां चण्डमाराध्य निर्माल्यं तस्य दापयेत्॥ २१॥ कल्पयेदासनं पश्चादाधारादि यथाक्रमम्। आधारशक्तिं कल्याणीं श्यामां ध्यायेदथो भुवि॥ २२॥ तस्याः पुरस्तादुत्कण्ठमनन्तं कुण्डलाकृतिम्। धवलं पञ्चफणिनं लेलिहानमिवाम्बरम्॥ २३॥ तस्योपर्यासनं भद्रं कण्ठीरवचतुष्पदम्। धर्मो ज्ञानं च वैराग्यमैश्वर्यं च पदानि वै॥ २४॥ आग्नेयादिश्वेतरक्तपीतश्यामानि वर्णतः। अधर्मादीनि पूर्वादीन्युत्तरान्तान्यनुक्रमात्॥ २५॥ राजावर्तमणि-प्रख्यान्यस्य गात्राणि भावयेत्। अस्योर्ध्वच्छादनं पद्ममासनं विमलं सितम्॥ २६॥ अष्टपत्राणि तस्याहुरणिमादिगुणाष्टकम्।

में डालें॥९॥ कुश के अग्रभाग, अक्षत, जौ, धान, तिल, घी, सरसों, फूल, भस्म— इन्हें अर्घ्यपात्र में डालें॥१०॥ कुश, फूल, जौ, धान, केवड़ा, तमाल— इन्हें तथा भस्म को क्रम से प्रोक्षणीपात्र में डालें॥११॥ सर्वत्र मन्त्र-न्यास कर बाहर से वर्म (कवच) से लपेट कर फिर अस्त्र से सुरक्षित कर धेनुमुद्रा का प्रदर्शन करे॥१२॥ सभी पूजाद्रव्यों का प्रोक्षणीपात्र के जल से प्रोक्षण करके फिर मूलमन्त्र से उनका विधिवत् शोधन करे॥१३॥ पात्रों के न मिलने पर सभी कर्मों में एक प्रोक्षणी से ही उत्तम साधक सामान्य अर्घ्य दे॥१४॥ फिर विनायकदेव को भक्ष्य-भोज्य आदि द्वारा क्रम से पूजाविधि के अनुसार द्वार के दक्षिण में पूजे॥१५॥ फिर अन्तःपुर के स्वामी सुवर्णपर्वत की भाँति समस्त आभूषणों से युक्त नन्दीश्वर की भलीभाँति पूजा करे॥१६॥ जो बालचन्द्र को मुकुट में धारण किये हैं।सौम्य, त्रिनेत्र, चतुर्भुज, दीप्तत्रिशूल, मृगीटंक तथा तेजस्वी नेत्रों वाले प्रभु हैं॥१७॥ चन्द्रमण्डल के समान मुख, हरिवक्त्र, उत्तर द्वार के समीप मरुत् की कन्या॥१८॥ सुयशा, जो पार्वतीजी के पादयुगल को दबाने में लगी है, की पूजा करके परमेष्ठी के भवन में प्रवेश करे॥१९॥ उक्त द्रव्यों से लिङ्गपूजा करके निर्माल्य को हटाकर फूल को धोकर उसकी शुद्धि के लिये सिर पर रखे॥२०॥ हाथ में फूल लेकर शिष्य की शुद्धि के लिये यथाशक्ति मन्त्र का जप करे। ईशान में चण्डदेव की आराधना कर निर्माल्य उसे दिला दें॥२१॥ फिर आराधना आदि क्रम से वहाँ आसन रखें। आधारशक्ति, कल्याणी तथा श्यामा का भूमि में ध्यान करे॥२२॥ उसके आगे फन उठाये हुए, पाँच फणों से युक्त सफेद वर्ण के कुंडलाकार बैठे अनन्त को, जो मानो आकाश को चाट रहा हो॥२३॥ उसके ऊपर भद्रासन, सिंह के सदृश चार पैरों वाले धर्म, ज्ञान, वैराग्य, ऐश्वर्य तथा पद इनको॥२४॥ आग्नेय आदि कोणों में सफेद, लाल, पीला, श्याम—इन वर्णों से और अधर्म आदि पूर्व से उत्तर तक क्रम से॥२५॥ इनके शरीरावयवों को राजावर्तमणि

केसराणि च वामाद्या रुद्रा वामादिशक्तिभिः ॥ २७॥ बीजान्यपि च ता एव शक्तयोऽन्तर्मनोन्मनीः । कर्णिकापरवैराग्यं नालं ज्ञानं शिवात्मकम् ॥ २८॥ कन्दश्च शिवधर्मात्मा कर्णिकान्ते त्रिमण्डले। त्रिमण्डलोपर्यात्मादितत्त्वत्रितयमासनम् ॥ २९॥ सर्वासनोपरि सुखं विचित्रास्तरणास्तृतम्। आसनं कल्पयेद्दिव्यं शुद्धविद्यासमुज्ज्वलम् ॥ ३०॥ आवाहनं स्थापनं च सन्निरोधं निरीक्षणम्। नमस्कारं च कुर्वीत बद्ध्वा मुद्राः पृथक्पृथक् ॥ ३१॥ पाद्यमाचमनं चार्घ्यं गन्धं पुष्पं ततः परम्। धूपं दीपं च ताम्बूलं दत्त्वाथ स्नापयेच्छिवौ ॥ ३२॥ अथवा परिकल्प्यैवमासनं मूर्तिमेव च। सकलीकृत्य मूलेन ब्रह्मभिश्चापरैस्तथा ॥ ३३॥ आवाहयेत्ततो देव्या शिवं परमकारणम्। शुद्धस्फटिकसङ्काशं देवं निश्चलमक्षरम् ॥ ३४॥ कारणं सर्वलोकानां सर्वलोकमयं परम्। अन्तर्बहिः स्थितं व्याप्य ह्यणोरणु महत्तरम् ॥ ३५॥ भक्तानामप्रयत्नेन दृश्यमीश्वरमव्ययम्। ब्रह्मेन्द्रविष्णुरुद्राद्यैरपि देवैरगोचरम् ॥ ३६॥ वेदसारं च विद्वद्भिरगोचरमिति श्रुतम्। आदिमध्यान्तरहितं भेषजं भवरोगिणाम् ॥ ३७॥ शिवतत्त्वमिति ख्यातं शिवार्थं जगति स्थिरम्। पञ्चोपचारवद्भक्त्या पूजयेल्लिङ्गमुत्तमम् ॥ ३८॥ लिङ्गमूर्तिर्महेशस्य शिवस्य परमात्मनः। स्नानकाले प्रकुर्वीत जयशब्दादिमङ्गलम् ॥ ३९॥ पञ्चगव्यघृतक्षीरदधिमध्वादिपूर्वकैः। मूलैः फलानां सारैश्च तिलसर्षपसक्तुभिः ॥ ४०॥ बीजैर्यवादिभिः शस्तैश्चूर्णैर्माषादिसम्भवैः। संस्नाप्यालिप्य पिष्टाद्यैः स्नापयेदुष्णवारिभिः ॥ ४१॥ घर्षयेद्बिल्वपत्राद्यैर्लेपगन्धापनुत्तये। पुनः संस्नाप्य सलिलैश्चक्रवर्त्युपचारतः ॥ ४२॥ सुगन्धामलकं दद्याद्धरिद्रां च यथाक्रमम्। ततः संशोध्य

के रूप में ध्यान करें। इनके ऊपर आच्छादन के रूप में निर्मल पद्मासन की भावना करे ॥ २६॥ उस कमल के आठ पत्र अणिमा आदि आठ गुणों वाले हैं। वामा आदि शक्तियाँ उसके केसर हैं। रुद्र वामा आदि शक्तियों से युक्त हैं ॥ २७॥ वे मनोन्मनी आदि शक्तियाँ ही बीज कही गयी हैं। ऊपर कर्णिका वैराग्य है, शिवात्मक ज्ञान ही उसकी नाल है ॥ २८॥ शिव धर्मात्मारूपी उसका कन्द है। कर्णिका के अन्त में तीन मण्डल हैं और उनके ऊपर तत्त्व आदि तीन आसन हैं ॥ २९॥ सब आसनों के ऊपर एक सुखद विचित्र आसन बिछा हुआ है। वहाँ एक शुद्धविद्या के दिव्य आसन की कल्पना करे ॥ ३०॥ आवाहन, स्थापन, चित्तवृत्ति का निरोध, निरीक्षण कर फिर अलग-अलग मुद्राओं द्वारा नमस्कार करे ॥ ३१॥ पाद्य, आचमन, अर्घ्य, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, ताम्बूल अर्पित कर शिव-शिवा को शयन कराये ॥ ३२॥ अथवा मूर्ति एवं आसन की कल्पना करके मूलमन्त्र, ब्रह्ममन्त्र तथा वेदमन्त्र से पूर्ण कर ॥ ३३॥ परमकारण शिवजी का देवी के साथ आवाहन करे, जो शुद्धस्फटिक के सदृश, निश्चल तथा अक्षर देव हैं ॥ ३४॥ जो सब लोकों के कारण हैं, सर्वलोकमय हैं, बाहर-भीतर व्याप्त होकर जो छोटे से छोटे और बड़े से भी बड़े हैं ॥ ३५॥ जो अव्यय, ईश्वर बिना प्रयत्न के ही भक्तों को दर्शन देते हैं और जिन्हें ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, रुद्र आदि देवता भी नहीं देख सकते ॥ ३६॥ जो वेदसार हैं, विद्वानों ने जिन्हें वे अगोचर हैं—ऐसा सुना है, जो आदि, मध्य, अन्तरहित हैं और भवबन्धनरूप रोग की जो परमऔषध हैं ॥ ३७॥ जिन्हें शिवतत्त्व कहते हैं, जो संसार का कल्याण करने के लिये स्थिर हैं, ऐसे शिवलिंग का पूजन पंचोपचार की भाँति भक्ति से करे ॥ ३८॥ परमात्मा महेश शिव की लिंगमूर्ति को स्नान कराते समय मांगलिक जय शब्द का उच्चारण करें ॥ ३९॥ पंचगव्य, घी, दूध, दही, मधु तथा चीनी आदि फल, फलों के सार, तिल, सरसों तथा सत्तुओं से ॥ ४०॥ जौ आदि के बीजों से, उड़द के चूर्ण से उबटन लगाकर गरम जल से स्नान कराये ॥ ४१॥ लेप तथा गन्धद्रव्यों को छुड़ाने के लिये बिल्वपत्र आदि से रगड़े। फिर चक्रवर्ती उपचारपूर्वक जल से स्नान कराये ॥ ४२॥ सुगन्धियुक्त आँवलों तथा हल्दी से पोतकर जल से लिंगबेर को शुद्ध करें ॥ ४३॥ सुगन्धि जल से, कुश तथा फूल मिश्रित जल से, सोना तथा रत्नयुक्त जल से तथा मन्त्रपूत जल से क्रमशः स्नान कराये ॥ ४४॥

सलिलैर्लिङ्गं बेरमथापि वा॥ ४३॥ स्नापयेद्गन्धतोयेन कुशपुष्पोदकेन च। हिरण्यरत्नतोयैश्च मन्त्रसिद्धैर्यथाक्रमम्॥ ४४॥ असम्भवे तु द्रव्याणां यथासम्भवसम्भृतैः। केवलैर्मन्त्रतोयैर्वा स्नापयेच्छ्रद्धया शिवम्॥ ४५॥ कलशेनाथ शङ्खेन वर्द्धन्या पाणिना तथा। सकुशेन सपुष्पेण स्नापयेन्मन्त्रपूर्वकम्॥ ४६॥ पवमानेन रुद्रेण नीलेन त्वरितेन च। लिङ्गसूक्तादिसूक्तैश्च शिरसाथर्वणेन च॥ ४७॥ ऋग्भिश्च सामभिः शैवैर्ब्रह्माभिश्चापि पञ्चभिः। स्नापयेद्देवदेवेशं शिवेन प्रणवेन च॥ ४८॥ यथा देवस्य देव्याश्च कुर्यात्स्नानादिकं तथा। न तु कश्चिद्विशेषोऽस्ति तत्र तौ सदृशौ यतः॥ ४९॥ प्रथमं देवमुद्दिश्य कृत्वा स्नानादिकाः क्रियाः। देव्यै पश्चात्प्रकुर्वीत देवदेवस्य शासनात्॥ ५०॥ अर्द्धनारीश्वरे पूज्ये पौर्वापर्यं न विद्यते। तत्र तत्रोपचाराणां लिङ्गे वान्यत्र वा क्वचित्॥ ५१॥ कृत्वाभिषेकं लिङ्गस्य शुचिना च सुगन्धिना। सम्मृज्य वाससा दद्यादम्बरं चोपवीतकम्॥ ५२॥ पाद्यमाचमनं चार्घ्यं गन्धं पुष्पं च भूषणम्। धूपं दीपं च नैवेद्यं पानीयं मुखशोधनम्॥ ५३॥ पुनश्चाचमनीयं च मुखवासं ततः परम्। मुकुटं च शुभं भद्रं सर्वरत्नैरलङ्कृतम्॥ ५४॥ भूषणानि पवित्राणि माल्यानि विविधानि च। अञ्जने चामरे छत्रं तालवृन्तं च दर्पणम्॥ ५५॥ दत्त्वा नीराजनं कुर्यात्सर्वमङ्गलनिःस्वनैः। गीतनृत्यादिभिश्चैव जयशब्दसमन्वितैः॥ ५६॥ हैमे च राजते ताम्रे पात्रे वा मृन्मये शुभे। पद्मकैः शोभितैः पुष्पैर्बीजैर्दध्यक्षतादिभिः॥ ५७॥ त्रिशूलशङ्खयुग्माब्जनन्द्यावर्तैः करीषकैः। श्रीवत्सस्वस्तिकादर्शवज्रैर्वह्यादिचिह्नितैः॥ ५८॥ अष्टौ प्रदीपान्परितो विधायैकं तु मध्यमे। तेषु वामादिकाश्चिन्त्याः पूज्याश्च नव शक्तयः॥ ५९॥ कवचेन समाच्छाद्य संरक्ष्यास्त्रेण सर्वतः। धेनुमुद्रां च सन्दर्श्य पाणिभ्यां पात्रमुद्धरेत्॥ ६०॥

उक्त द्रव्यों के न होने पर जो उपलब्ध हो अथवा मन्त्रपूत जल से श्रद्धापूर्वक शिवजी को स्नान कराये॥ ४५॥ कलश से, शंख से, वर्धनी से, हाथ से, कुश तथा पुष्प से मन्त्रपूर्वक शिव को स्नान कराये॥ ४६॥ पवमान रुद्र, नीलरुद्र, त्वरितमन्त्र, लिंगसूक्त आदि सूक्तों से, अथर्वशीर्ष से॥ ४७॥ ऋग्वेद, सामवेद के मन्त्रों से, पंचब्रह्ममन्त्र से तथा ॐकार से देवदेवेश शिव को स्नान कराये॥ ४८॥ शिव-शिवा के स्नान में कोई विशेष भेद नहीं है, क्योंकि वे दोनों समान हैं॥ ४९॥ पहले महादेव को स्नान कराये, बाद में महादेवी को; यह देवदेव की आज्ञा है॥ ५०॥ अर्धनारीश्वर दोनों ही पूज्य हैं, उनके पूजन में आगे-पीछे का विचार नहीं है। अन्यत्र कहीं शिव-शिवा के पूजा का विचार है॥ ५१॥ लिंग का अभिषेक करके पवित्र सुगन्धित वस्त्र से उसे पोंछे। फिर वस्त्र तथा यज्ञोपवीत चढ़ायें॥ ५२॥ पाद्य, आचमन, अर्घ्य, गन्ध, पुष्प, भूषण, धूप, दीप, नैवेद्य, मुखशुद्ध करने के लिये जल दें॥ ५३॥ फिर आचमनी, मुखवास ताम्बूल, सभी रत्नों से जटित शुभ्रमुकुट॥ ५४॥ पवित्र भूषण, अनेक प्रकार की मालाएँ, अञ्जन, चामर, छत्र, ताड़ का पंखा, दर्पण॥ ५५॥ इन्हें अर्पित कर सभी मंगल-वाद्यों को बजाते हुए नीराजन करे। गीत, नृत्य, जय-जयकार के साथ॥ ५६॥ सोने, चाँदी, ताँबे अथवा मिट्टी के शुभपात्र में कमलपुष्प, बीज, दही, अक्षत आदि से॥ ५७॥ त्रिशूल, शंख, दो कमल, नन्द्यावर्त, करीष, श्रीवत्स, स्वस्तिक, आदर्श, वज्र, अग्नि से चिह्नित॥ ५८॥ आठ दीपक चारों ओर, एक दीपक बीच में रखें। उनमें वामा आदि नौ शक्तियों का ध्यान कर उनकी पूजा करें॥ ५९॥ कवच से ढँककर, अस्त्रमन्त्र से चारों ओर रक्षाकर धेनुमुद्रा दिखाकर दोनों हाथों से पात्र को उठाये॥ ६०॥ अथवा उस पात्र में क्रमशः पाँच दीपों को रखें। विदिशाओं में भी एक-एक दीप रखे, एक दीप बीच में रखें॥ ६१॥ तब उस पात्र को उठाकर मूलमन्त्र का ध्यान करते हुए तीन बार लिंग के ऊपर घुमायें॥ ६२॥ सुगन्धित भस्मयुक्त अर्घ्यजल शिवजी

अथवारोपयेत्पात्रे पञ्चदीपान्यथाक्रमम्। विदिक्ष्वपि च मध्ये च दीपमेकमथापि वा॥ ६१॥ ततस्तत्पात्रमुद्धृत्य लिङ्गादेरुपरि क्रमात्। त्रिः प्रदक्षिणयोगेन भ्रामयेन्मूलविद्यया॥ ६२॥ दद्यादर्घ्यं ततो मूर्ध्नि भसितं च सुगन्धितम्। कृत्वा पुष्पाञ्जलिं पश्चादुपहारान्निवेदयेत्॥ ६३॥ पानीयं च ततो दद्याद्दत्त्वा वाचमनं पुनः। पञ्चसौगन्धिकोपेतं ताम्बूलं च निवेदयेत्॥ ६४॥ प्रोक्षयेत्प्रोक्षणीयानि गाननाट्यानि कारयेत्। लिङ्गादौ शिवयोश्चिन्तां कृत्वा शक्त्या जपेच्छिवम्॥ ६५॥ प्रदक्षिणं प्रणामं च स्तवं चात्मसमर्पणम्। विज्ञापनं च कार्याणां कुर्याद्विनयपूर्वकम्॥ ६६॥ अर्घ्यं पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा बद्ध्वा मुद्रां तथाविधि। पश्चात्क्षमापयेद्देवमुद्वास्यात्मनि चिन्तयेत्॥ ६७॥ पाद्यादिमुखवासान्तमर्घ्याद्यं चातिसङ्कटे। पुष्पविक्षेपमात्रं वा कुर्याद् भावपुरःसरम्॥ ६८॥ तावतैव परो धर्मो भावेन सुकृतो भवेत्। असम्पूज्य न भुञ्जीत शिवमाप्राणसञ्चरात्॥ ६९॥ यदि पापस्तु भुञ्जीत स्वैरं तस्य न निष्कृतिः। प्रमादेन तु भुङ्क्ते चेत्तदुद्गीर्य प्रयत्नतः॥ ७०॥ स्नात्वा द्विगुणमभ्यर्च्य देवं देवीमुपोष्य च। शिवस्यायुतमभ्यस्येद्ब्रह्मचर्यपुरःसरम्॥ ७१॥ परेद्युः शक्तितो दत्त्वा सुवर्णाद्यं शिवाय च। शिवभक्ताय वा कृत्वा महापूजां शुचिर्भवेत्॥ ७२॥

इति श्रीशिवमहापुराणे सप्तम्यां वायवीयसंहितायामुत्तरभागे शास्त्रोक्तशिवपूजनवर्णनं नाम चतुर्विंशोऽध्यायः॥ २४॥

के सिर पर छोड़ें। फिर पुष्पांजलि समर्पित कर उपहार दें॥ ६३॥ आचमनी से पीने योग्य जल दें। फिर पंचसुगन्धि से युक्त ताम्बूल अर्पित करें॥ ६४॥ प्रोक्षणीय पदार्थों का प्रोक्षण करके नाच-गाना आदि करे। लिंग में शिव-शिवा का ध्यान कर यथाशक्ति शिव का जप करे॥ ६५॥ प्रदक्षिणा, प्रणाम, स्तुति करके विनय के साथ अपने कार्यों तथा अपने को उन पर न्यौछावर करे॥ ६६॥ अर्घ्य, पुष्पांजलि देकर धेनुमुद्रा का प्रदर्शन कर अन्त में देव का हृदय में ध्यान करता हुआ क्षमा-प्रार्थना करके उनका विसर्जन करे॥ ६७॥ अतिसंकट की स्थिति में अर्घ्य, पाद्य से लेकर मुखवास समर्पण करने तक करे अथवा भक्तिपूर्वक केवल पुष्प चढ़ाये॥ ६८॥ इतना ही परमधर्म है, भाव से ही पुण्य मिलता है। प्राण रहते हुए शिवपूजन किये बिना भोजन न करे॥ ६९॥ यदि कोई पापी भोजन कर लेता है, तो उसके पाप का कोई निराकरण नहीं है। यदि भूल से खा लेता है, तो प्रयत्न से उसे उगल दे॥ ७०॥ स्नान करके शिव-शिवा का दूना पूजन कर ब्रह्मचर्य के साथ दस हजार शिव का जप करे॥ ७१॥ दूसरे दिन यथाशक्ति सुवर्ण आदि शिव को या शिवभक्त को देकर फिर महापूजा करके पवित्र हो जाता है॥ ७२॥

इस प्रकार परममाहेश्वर **पण्डित तारादत्त त्रिपाठी** के पुत्र डॉ० **ब्रह्मानन्द त्रिपाठी** द्वारा रचित **शिवाटीका,** टिप्पणी आदि से संवलित शिवमहापुराण में शास्त्रोक्तपूजन-वर्णन नामक चौबीसवाँ अध्याय समाप्त॥ २४॥